

संस्कृत

संधि प्रकरण

Mission Govt Exam

Latest Notification, Admit Card,
Result, Syllabus, Study Material,
Notes, Quiz आदि के लिए

हमारी वेबसाइट

www.missiongovtexam.com
पर विजिट करें।

www.missiongovtexam.com

संधि-प्रकरणम्

47.

सूत्र → “परः सन्निकर्षः संहिता”
 हो वर्णों का परस्पर मेल होने पर यदि उनमें से किसी भी वर्ण में कोई विकार उत्पन्न हो जाता है तो उसे संधि कहते हैं।

हो वर्णों का परस्पर मेल होने पर यदि उनमें कोई विकार उत्पन्न नहीं होता है तो उसे संयोग / संहिता नहीं मानकर के बल संयोग माना जाता है। जैसे :-

संधि → उद् + लौखः → उलौखः → उ + ल् → ‘उ’ के स्थान पर ‘ल्’

संयोग → उद् + यानम् → उद्यानम् → उ + य् → कोई विकार नहीं आया

संधि → सम् + कारः → संस्कारः → म् + क् → ‘म्’ का अनुस्वार / ‘स्’ का आवाय

संयोग → सत्यम् + एव → सत्यमेव → म् + ए → कोई विकार नहीं आया

संधि → खाद्य + अपि → खाद्यापि → अ + अ → ‘अ’ का आवाय

संयोग → अन् + आटि → अनाटि → अ + आ → कोई विकार नहीं

⇒ संधि के भेद ⇒

आचार्य वरदराज द्वारा रखित ‘लघु सिद्धान्त की मुद्री’, रूपना के अनुसार संधि के प्रमुखतः ‘तीव्र’ भैद माने गये हैं।

यथा → 1. अन् (रूपर) संधि → (i) अन् + अन् → यदि + अपि (ः + ए)

2. हल् (त्यंभन) संधि → (i) हल् + अन् → जगत् + देवः (त् + ए)

(ii) अन् + हल् → शिव + धाया (अ + द्व्)

(iii) हल् + हल् → जगत् + नाथः (त् + न्)

3. विसर्ग संधि → (i) विसर्ग + अन् → अतः + एव (ः + ए)

(ii) विसर्ग + हल् → नमः + ते (ः + त्)

नोट →

आचार्य भद्रटीर्जी दीक्षित द्वारा रखित ‘वैयाकरण सिद्धान्त की मुद्री’, रूपना के अनुसार संधि के ‘पाँच’ भेद माने गये हैं।

यथा → 1. अन् संधि
 3. विसर्ग संधि
 5. इवादि संधि

2. हल् संधि

4. यन्त्रिमा संधि

48.

आयाद्य भृतोपी दीक्षित के लिए 'आयाद्य वरदान' में इनमें से 'प्रकृतिभाव' संधि को 'अन्य' संधि में रखा 'स्वादि' संधि को 'विसर्ग' संधि में मिला दिया है। जिसके कारण वर्तमान में संधि के प्रमुखतः 'तीन' भेद ही स्वीकृत रूप किये जाते हैं। यहाँ -

1. अन्य संधि
2. रुद्र संधि
3. विसर्ग संधि

1. अन्य संधि या स्वर संधि

जब किसी अन्य (रुद्र) वर्ण के साथ अन्य वर्ण का ही मैल होता है तो वहाँ अन्य संधि मानी जाती है। अन्य संधि के भी पुनः निम्नलिखित 'आठ' उपचेतक कर दिये जाते हैं -

- (i) चण्ड संधि
- (ii) आयादि संधि
- (iii) शुण संधि
- (iv) ब्रह्मि संधि
- (v) दीर्घ संधि
- (vi) परलग संधि
- (vii) छूवलप संधि
- (viii) प्रकृतिग्रन्थ संधि

(i) यष्टु संधि

पहलान → 'इ-ई/उ-ऊ/ऋ-ऋ/य-यौ+कौ' इसमें (असमान) स्वर, संधि कार्य →

स्वर → "इको यष्टाच्य"

49.

इक → इ-ई उ-ऊ ऋ-ऋ ल
यष्ट → य व र ल
अन्य → सभी स्वर (असमान स्वर)

प्र॒ से -

यादि + अपि, स्त्री + उपयोगी, साधु + आशु
यद् (अ) अ पि स्त् (अ) उ पयोगी साध् (अ) आ ज्ञ
यद् यू अ पि स्त् यू उ पयोगी साध् व आ ज्ञ
यदयपि (यद्यपि) स्त्रयुपयोगी साध्वाज्ञा

वधू + अर्थी, पितृ + उपदेशः, मातृ + इन्ध
वध् (अ) अर्थी पित् (अ) उ पदेशः मात् (अ) इ व्य
वध् व अर्थी पित् र उ पदेशः मात् र इ व्य
वध्वर्थी पित्रुपदेशः मात्रिव्य

लू + आकृतिः, शुरु + अणाम्, वक्तु + उद्वीध
लू आ कृतिः शुर् (अ) अणाम् वक्त् (अ) उ द्वीधनम्
ल आ कृतिः शुर् व अणाम् वक्त् र उ द्वीधनम्
आकृतिः शुरुणाम् वक्त्रुद्वीधनम्

विच्छेद कार्य →

शार्त → शब्द में 'शाधा अक्षर + य/व/र' लिखा जैवाचार्य
कार्य → (i) आहे अक्षर के प्रारंभ लिख ही,

(ii) 'य/व/र' के अनुसार मात्रा लगा दी।

(य = इ-ई, व = उ-ऊ, र = ऋ)

(iii) 'य/व/र' की छोड़कर 'शेष शंशा+' के आगे लिख,

अभ्यपृणाम् → अभि + अपृणाम्

देव्युपासना → हैवी + उपासना

थातिकः → धातु + इकः

वेद्वागमनम् → वद्य + आगमनम्
मात्राजा → मातृ + आजा

नोट → यदि किसी शब्द के आरम्भ में 'स्व' शब्दहोता लिखा हुआ हो तो उसका अर्थ 'अपना / आपनी / आपने' बनता हो रहा हो तो उसका विच्छेद करते समय 'स्व' शब्दहोता को तो '+' के पहले लिख दिया जाता है एवं '+' के आगे का शब्द इन्य संधि नियमों के अनुसार प्रभुकर लिया जाता है। जैसे:-

'स्वधः' → स्व + अधः (दीर्घ संधि)

'स्वाधी' → स्व + अधी (दीर्घ संधि)

'स्वाध्यायः' → स्व + अध्यायः (दीर्घ संधि)

'स्वाध्यामनम्' → स्व + अध्यामनम् (दीर्घ संधि)

'स्वालयनम्' → स्व + अलयनम् (दीर्घ संधि)

'स्वर्प्त्वा' → स्व + अर्प्त्वा (उण संधि)

'स्वेतिष्ठकम्' → स्व + एतिष्ठकम् (ब्रह्म संधि)

'स्वाइंगः' → स्व + अइंगः (दीर्घ संधि)

'स्वत्पादः' → सत्प + अदः (दीर्घ संधि)

'सत्याग्रहः' → सत्य + अग्रहः (दीर्घ संधि)

'सत्यांशः' → सत्य + अंशः (दीर्घ संधि)

प्रश्न → 'धात्रु + अंशः' इत्यर्थ सुनिध्युतप्रहारिते →

(A) धात्रेशः

(B) धात्रेशः

(C) उभी

(D) उभवेन

वर्णतथा → 1. 'सुधी + उपास्यः' इस पद के निम्नानुसार चार रूपिधि रूप बनाये जाते हैं -

- (i) स्क धम्-एक यम् → सुदृष्टपास्यः
(ii) द्वि धम्-द्वि यम् → सुदृष्टपास्यः
(iii) द्वि धम्-एक यम् → सुदृष्टपास्यः
(iv) एक धम्-द्वि यम् → सुदृष्टपास्यः

सर्व ✓

2. 'मधु + अरिः' इस पद के भी निम्नानुसार चार संधि रूप बनाये जाते हैं -

- (i) एक धम्-एक वम् → मदृष्टरिः
(ii) द्वि धम्-द्वि वम् → मदृष्टलरिः
(iii) द्वि धम्-एक वम् → मदृष्टवरिः
(iv) एक धम्-द्वि वम् → मदृष्टवरिः

सर्व ✓

3. 'धात्रु + अंशः' इस पद के निम्नानुसार हो संधि रूप बनाये जाते हैं →

- (i) एक तम्-एक रम् → धात्रेशः } उभी ✓
(ii) द्वि तम्-एक रम् → धात्रेशः } उभी ✓

(ii) अयाहि संधि

पर्यान् → 'ए/ओ/ऐ/ओ' + 'कोई भी स्वर (समान या असमान) संधि करते हैं'

स्वा → "एचौडयवायावः"

एय् → ए ओ ऐ है ओ

अय् अव् आय् आव्

चे + अनम्, हो + अनम्, हो + इका

च् (ए) अ नम् ह् (ओ) अ नम् श् (ऐ) इ का

च अय् अ नम् ह अय् अ नम् ग अय् इ का

चयनम् हवनम् गायिका

52.

इ/ष + स्वर/ट/यन्त्र/ठक्का/पक्का → न/ठ/
इ/ष + एक भी अन्य वर्ण होने पर → न/ठ/ए/।

झी + अकः, हौर + ए, छोरो + ए
ब्रा (अ) थ कः हर (ए) ए गुर (अ) ए
स्था आव अकः हर अथ ए गुर अव ए
स्थावकः हरशी उत्तरवी
द्वी + एव, रामलक्ष्मणी + अपि
द्व (अ) एव रामलक्ष्मण (अ) अपि
द्व आव एव रामलक्ष्मण आव अपि
जांवव रामलक्ष्मणावापि

⇒ विच्छेद कार्य ⇒

उत्ति → ब्राह्म में 'अथ/अव/आव/आव' की आवाज मिलती है।
कार्य → (i) आवाज से पहले लिखा अल्फांश लिखो।

(ii) आवाज के द्वितीय मण्डा लगा दो।
(अथ=ए, अव=ओ, आव=ऐ, आव=अ॒)

(iii) आवाज की छोड़कर शेष कंश '+ के आगे लिख दो।

नयनम् → ने + अनम्

गवेषणा → गो + एषणा

विनायकः → विने + अकः

धाविका → धी + इका

हृति → हो + इ

भावी → भी + इ

अवणम् → ओ + अनम्

आवणम् → ओ + अनम्

बालकाविका → बालको + इका

अविद्यः → ओ + इद्यः

⇒ अथ विशेष मेयम् ⇒

53.

1. स्त्री → "वान्तो यि प्रत्यय"
‘ओ/ओ+य’ से आवभ प्रत्यय → अवाद स्वर संहिता
अव आव
गो + यम् हो + यम्
ग्र (अ) यम् ह अव यम्
ग्र अव यम् हव्यम् (हवन करने वायम्)
गव्यम् (गायका विकार)

लो + यम्
नु (अ) यम् लो (अ) यम्
नु आव यम् लो आव यम्
नाव्यम् (नावका विकार) लोव्यम् (काटने वायम्)

2. वारिक - क्ष अध्य परिमाणे च की
मार्ग के परिमाणवत्तक अधी में 'गो' ब्राह्म के साथ
'यूति' ब्राह्म का मेल होने पर व्यंजन संहिता नहीं मानते।
'अवाद' स्वर संहिता मानी जाती है। जैसे:-

गो + स्त्रिः

ग्र (अ) शति:

ग्र अव शति:

ग्रव्यतिः (दो कोस की दूरी)

3. स्त्री → "अवड़-स्फोटायनस्य"
‘स्फोटायन’ मुनि के मतानुसार 'गो' ब्राह्म के साथ होता है।
'अ' स्वर का मेल होने पर 'ओ' को 'अव' में नहीं बदलकर 'अवङ्' में बदला जाता है। जैसे:-

गो + अव्यम्

ग्र (अ) अ यम्

ग्र अवङ् डा यम् (अवड़-स्फोटायनस्य)

54.

ग्र अव अ ग्रम् (हलन्त्यम्)
ग्र अव आ ग्रम् (अकः सर्वोदीर्घः)
ग्राम

नोट →
(i) ग्रो + अग्रम् → ग्रो अग्रम् (एवं रूप संधि)
(ii) ग्रो + अग्रम् → ग्रो अग्रम् (प्रकृतभाव संधि)

प्रश्न →
(A) श्वाग्राम
(B) ग्रोग्रम्
(C) ग्रो अग्रम्
(D) सर्व

ग्रो + अश्वम्
ग्र (अ) अश्वम्
ग्र अव अश्वम्
ग्र अव आश्वम्
ग्राश्वम् (अयादि / हीर्ष संधि)

ग्रो + अक्षिः
ग्र (अ) अक्षिः
ग्र अव अक्षाः
ग्र अव आक्षाः
ग्राक्षाः (अयादि / हीर्ष संधि)

—/—

55.

सूत्र → “इन्द्रे च”
‘ही’ शब्द के साथ “इन्द्र” शब्द का मेल हीते पर भी
‘ओ’ के ‘अव’ में नहीं बदलकर ‘अवड़’ में बदला जाता है।
ग्र (अ) इन्द्रः
ग्र अवड़ इन्द्रः (“इन्द्रे च”)
ग्र अव इन्द्रः (“हलन्त्यम्”)
ग्र अव अ इन्द्रः
ग्र अव ए न्द्रः (“आद मृणः”)
ठिंड़ः

5.

सूत्र → “लोपः शाक्त्यरय”
‘शाक्त्य’ मुनि के मतानुसार निम्नलिखित छः शब्दों में
प्राप्त होने वाले ‘अय् / अव / धाय् / आव’ आदेशों के
‘य / व’ का विकल्प से लोप हो जाता है। अरः इनके
सेना ही-ही संधि रूप मान्य होते हैं। यथा -
हैर + इह
हर (ए) इ ह
हर अय इ ह (एचौइयायात)
- हरयिद (पाणिनि के भद्रसार)
- हर इ ह (“लोपः शाक्त्यरय” सूत्र से ‘य’ का लोप)
उभी -

विष्णो + इह
विष्ण (अ) इह
विष्ण अव इह
विष्णविष्ण (पाणिनि के भद्रसार)
विष्ण इ ह (शास्त्रालय के भद्रसार)
उभी -

www.missiongovtexam.com

शिये + उच्चतः:		(iii) शुण संधि
शिय (अ) उच्चतः:	⇒	शुण संज्ञा विद्याप्रकृत्यां → “अक्षेत्र शुणः” अधीत् ‘अ, ए, ओ’ इन तीनों की शुण संज्ञा होती है।
शिय आयु उच्चतः:		
- शिय या शुच्यतः (‘पाणिनि’ के अनुसार)	⇒	शुण संधि की पद्धति →
- शिया उच्चतः (‘शाकल्य’ के अनुसार)		‘अ/आ + इ-ई/उ-ऊ/ऋ-ऋू / ओ’
उभी ↴		
शुरा + उत्कः:		शुण संधि विद्याप्रकृत्यां (संधि कार्य) ⇒
शुर (अ) उत्कः:	(i)	शुर → “आद शुणः”
शुर आवृ उत्कः:		(अ) अ/आ + इ/ई → ए (एकादेश)
- शुरा उत्कः (‘पाणिनि’ के अनुसार)		(ख) अ/आ + उ/ऊ → औ (एकादेश)
- शुरा उत्कः (‘शाकल्य’ के अनुसार)	(ii)	शुर → “उरण रपरः”
उभी ↴		(अ) अ/आ + ऋ/ऋ → अर् (एकादेश)
हे + एहि		(ख) अ/आ + लृ → अल् (एकादेश)
हर (अ) एहि		
हर अथ एहि		उप + इन्द्रः, महा + ईश्वरः, गडगा + उदकम्
- हरयेहि (‘पाणिनि’ के अनुसार)		उप (अ अ) इन्द्रः महा आ ई श्वरः गडगा आ उ दकम्
- हर एहि (‘शाकल्य’ के अनुसार)		उप ए इन्द्रः महा ए श्वरः गडगा औ दकम्
उपेन्द्रः:		उपेन्द्रः महैश्वरः गडगा गोदकम्
विठ्ठा + एहि		जल + ऊर्मि: वर्षा + ऋतुः, पुरुष + भृष्टयः
विठ्ठा (अ) एहि		जल (अ अ) मिः वर्षा आ ऋतुः पुरुष अ भृष्टयः
विठ्ठा अवृ एहि		जल ओ मिः वर्षा अर तुः पुरुष अर षमः
- विठ्ठा वैहिः (‘पाणिनि’ के अनुसार)		जलो मिः वर्षुः षुरुषः
- विठ्ठा छहि (‘शाकल्य’ के अनुसार)		
विठ्ठा छहि		तव + लृकारः, साम + भृत्या, पुरुष + उत्तमः
		तव (अ अ) कारः साम अ भृत्या पुरुष अ उत्तमः
		तव अल् कारः साम अर चा पुरुष औ तत्मः
		तवल्कारः सामन्ता पुरुषत्मः

58.

विद्युत कार्य ⇒

बात → शब्द में 'ए/ओ' की मात्रा हो अथवा 'अर/अल' की आवाज निकल रही हो।

कार्य → ?

- 'ए' की मात्रा होने पर → अ/आ + इ/ई
- 'ओ' की मात्रा होने पर → अ/आ + उ/ऊ
- 'अर' की आवाज होने पर → अ/आ + अर
- 'अल' की आवाज होने पर → अ/आ + लू

गणितः → गण + ईशः ✓ / गणा + ईशः ✗

कमलेशः → कमला + ईशः ✓ / कमल + ईशः ✗

गुडाकेशः → गुडाका + ईशः (जोड़ का जो स्वामी है) ➔ गुड़ाकेश

चिन्हितः → चिन्हा + ईशः (सुभद्रा का जो ईश है - अर्थात्)

महेन्द्रः → महा + इ-दः

महेशः → महा + ईशः

लुप्तोपमा → लुप्ता + उपमा ✓ / लुप्त + उपमा ✗

दृष्टोपमा → दृष्टा + उपमा ✓ / दृष्ट + उपमा ✗

घास-गोप्तिः → घासा + गोप्तिः ✓ / घासा + उप्तिः ✗

शीतोष्णाम् → शीत + उष्णाम् ✓ / शीत + उष्णाम् ✗

सूर्योत्तमा → सूर्य + उत्तमा ✓ / सूर्य + उत्तमा ✗

मादेशः → मा + उदेशः ✓ / मा + उदेशः ✗ (जड़के-पर्वती)

देवधिः → देव + धर्षिः

महर्षिः → महा + र्षर्षिः

राजर्षिः → राजन् + र्षर्षिः I ✓
राज + र्षर्षिः II ✓ } सर्वे
राजा + र्षर्षिः III ✓

देवधर्षिः → देव + धर्षर्षिः (देवताओं का बैल)

ममलकारः → मम + लकारः

59.

(iv) वृद्धि संधि

बृद्धि संज्ञा विद्यायक सूत्र → "वृद्धिरेत्य".
बृद्धात् 'अ', 'ह', 'ओ', इन तीनों को किसी वृद्धि संज्ञा मधीजत्वे

पहचान → 'अ/आ + ए/ओ/ऐ/ओ'

→ वृद्धि संधि विद्यायक सूत्र / संधिकार्य = "वृद्धिरेति"

(i) अ/आ + ए/ऐ → ऐ (एकादेश)
(ii) अ/आ + ओ/ओ → ओ (एकादेश)

अपवाद की स्थिति में मात्रा →

(iii) अ/आ + ऋ → आर (एकादेश)

एक + एकम्, देव + देवर्यम्, जल + ओच्यः
एक (अ ए) कम् देव (अ ए) र्यम् जल (अ ओ) यः
एक ऐ कम् देव ऐ र्यम् जल ओ यः
एकेकम् देवेऽर्यम् जलौयः (जल शब्द)

महा + ओषधिः

मह (अ ओ) षधिः

मह ओ षधिः

महौषधिः

विद्युत-कार्य

बात → शब्द में 'ऐ/ओ' की मात्रा होनी चाहिए।

कार्य →

(i) 'ऐ' की मात्रा होने पर → अ/आ + ए/ऐ

(ii) 'ओ' की मात्रा होने पर → अ/आ + ओ/ओ

लोकेष्वरा → लोक + एष्वरा ✓ / लोक + उष्वरा ✗

महेश्वरः → महा + एश्वरः / महा + उश्वरः ✗

यद्यनकं → यद्यना + एका / यद्यना + ईका
 मतीक्यम् → मत + एक्यम् / मत + लक्यम्
 सैषा → सा + एषा ~ / सा + ईषा ×
 जलीकः → जल + ओकः ~ / जल + ओकः × (जलं जलिः)
 गड़.ओधः → गड़.गा + ओधः ~ / गड़.गा + ओधः ~
 कूठा/उक्तूठयः → कूठा + ओक्तूठयः (उक्तूठा + य)
 ज्ञानोत्सवयः → ज्ञान + ओत्सवयः
 महेरावतः → महा + एरावतः ~ / महा + दरावतः ×
 प्रैयोगिकी → प्र + ओयोगिकी

⇒ शुण संधि व बृहिं संधि के क्रियान्वयम् (अपवाद) ⇒

वार्तिक - कृ प्रादूर्होदयेष्ट्येषु कृ

(प्र आद् ऊह ऊह ऊहि एष एष्य एष्य)
 'प्र' उपसर्ग के साथ 'ऊह, ऊह, ऊहि, एव, एष्य',
 शब्दों का मेल होने पर बृहिं संधि एकादेश (ऐं/ओं)
 किया जाता है एवं बृहिं संधि मानी जाती है। जैसे:-

प्र + ऊहः → प्रौहः (बृहिं संधि) } शुण संधि के
 प्र + ऊहः → प्रौहः (बृहिं संधि) } अपवाद
 प्र + ऊहिः → प्रौहिः (बृहिं संधि) }
 प्र + एषः → प्रैषः (बृहिं संधि) } परस्पर संधि के
 प्र + एष्यः → प्रैष्यः (बृहिं संधि) } अपवाद

नोट → यदि इन शब्दों के साथ कोई प्रत्यय जोड़कर संधि करते करते जाए तो वहाँ शुण एकादेश (ए/ओं) ही करनाया जा रहा हो तो किया जाता है एवं शुण संधि दी मानी जाती है। जैसे:-
 किया जाता है एवं शुण संधि दी मानी जाती है। जैसे:-
 प्र + ऊहवान् → प्रौहवान् (शुण संधि)
 प्र + ऊहवती → प्रौहवती (शुण संधि)

2. वार्तिक - कृ स्वादीररिणोः कृ
 'स्व' ऊह के साथ द्वितीय पद में ईरी/ईरिण
 शब्दों का मेल होने पर बृहिं एकादेश (ऐ) किया जाता है एवं बृहिं संधि मानी जाती है। जैसे:-
 स्व + ईर : → स्वैरः (बृहिं संधि)
 इत्थानुसार गमन करने वाला परवा
 स्व + ईरिणी → स्वैरिणी (बृहिं संधि)
 इत्थानुसार गमन करने वाली रुचि
 3. वार्तिक - कृ अहोऽहिन्यामुपसङ्ख्यानम् कृ
 (अहोत अहिन्यामुपसङ्ख्यानम्)
 'अहो' ऊह के साथ 'अहिनी' ऊह का मेल होने पर
 बृहिं एकादेश (ऐं) किया जाता है एवं बृहिं संधि
 मानी जाती है। जैसे:-
 अहो + अहिनी → अहोहिनी (बृहिं संधि)

नोट:- (i) 'न' का 'ण' (गाल) करने का नियम →
 1. स्वृग → "रषाष्यां नौष ; समानपदे"
 2. स्वृग → "अटकुपाड़नुम्भ्यवायेऽपि"
 (ii) 'र/ष' + स्वर, ठ, यवर, कवर्ग, पवर, 'आइ' उपसर्ग,
 'मुम् व्यागम' + न/ण ~
 (iii) 'र/ष' + इनके अलावा एक भी अन्यका होने पर → न/व
 जैसे:- X → रमायन/रामायण → 'र आ म आ य अ न/ण'
 → रसायन/रसायण → 'र अ स आ य अ न/ण',
 → वक्षीणी/भक्षीणी → य कृ ष औ ह इ नी/नी'

62.

अपवाह दूष → “आचार्यादृष्टलं-य”
 आचार्यानी → ‘आ च आ र अ आ नी/नी’
 अर्थात् ‘आचार्य’ शब्द का रुग्णिलिंग रूप बनाते
 समय ‘तत्व’ आदेश नहीं होता है। यहाँ ‘आचार्यानी’
 ही सही रूप माना जाता है।
 आचार्यानी / भावाचार्यानी

माट → रामान → र आ म आ ग/न
 ‘न’ के बागे रखर नहीं होने के कारण ‘न’ ही रहता।
 इसका ‘न’ (तत्व) वही किया जायेगा।

⇒ अक्षीहीनी ⇒ ‘अक्षीहीनी’ भगवान कठा की एक
 सेना विशेष का नाम है। इस सेना में निमानुसार
 सीनिक शामिल रहेंगे जोते हैं –

- (i) दाढ़ी → 21,870
- (ii) रटा → 21,870
- (iii) घोड़े → 65,610 (21870 × 3)
- (iv) भेदल (पदार्थ) → 1,09,350 (21870 × 5)
 218,700

4. वार्तिक - क्रृष्ण + क्रृष्णानाम् दशानाम् ॥
 ‘प्र/वल्सतर/क्रम्बल/वसन/क्रष्ण/दशा’, इन स्व:
 शब्दों के साथ ‘क्रष्ण’ शब्द का मिल दीजिए पर बहुत
 एकदिशा (अस्त) किया जाता है। एवं बहुत संधि
 मानी जाती है। जैसे:-

- प्र + क्रष्णाम् → प्राणाम् (बहुत संधि)
- वल्सतर + क्रष्णाम् → वल्सतराणाम् (बहुत संधि)
- क्रम्बल + क्रष्णाम् → क्रम्बलाणाम् (बहुत संधि)
- वसन + क्रष्णाम् → वसनाणाम् (बहुत संधि)

—/—

63.

लगा + क्रष्णाम् → लगाणाम् (बहुत संधि)
 दशा + क्रष्णाम् → दशाणाम् (बहुत संधि)

नोट → इन स्व: शब्दों के अलावा अन्य किसी शब्द के साथ
 ‘क्रष्ण’ शब्द का मिल होने पर उन एकदिशा (अस्त)
 ही किया जाता है। एवं उन संधि ही मानी जाती है।
 महा + क्रष्णाम् → महाणाम् (गुण संधि)
 उत्तम + क्रष्णाम् → उत्तमाणाम् (गुण संधि) → मत्तदाम्
 अध्यम + क्रष्णाम् → अध्यमाणाम् (गुण संधि) → मत्तदाम्

5. वार्तिक - क्रृष्ण + क्रृष्णान्य समान्य क्रृ

‘अ/आ’ स्वर के साथ यदि ‘क्रृष्ण’ शब्द का मिल हो
 रहा है। एवं सम्पूर्ण पढ़ में तृतीया तत्पुरुष समान्य भी
 बन रहा है तो वहाँ बहुत एकदिशा (अस्त) किया
 जाता है। एवं बहुत संधि मानी जाती है। जैसे:-

- सुख + क्रृष्ण : → सुखार्तः (बहुत संधि) → सुखेनकर्तः (दृष्ट. स.)
- तषा + क्रृष्ण : → तषार्तः (बहुत संधि) → तृष्णया कर्तः (दृष्ट. स.)
- पिपासा + क्रृष्ण : → पिपासार्तः (बहुत संधि) → पिपासया कर्तः (दृष्ट. स.)
- क्षुधा + क्रृष्ण : → क्षुधार्तः (बहुत संधि) → क्षुधया कर्तः (दृष्ट. स.)
- भुमुक्षा + क्रृष्ण : → भुमुक्षार्तः (बहुत संधि) → भुमुक्षया कर्तः (दृष्ट. स.)

नोट → यदि इस प्रकार के शब्दों में तृतीया तत्पुरुष समान्य नहीं
 बन रहा है तो वहाँ उन एकदिशा (अस्त) ही किया
 जाता है। एवं उन संधि ही मानी जाती है। जैसे:-

- परम + क्रृष्ण : → परमार्तः (बहुत संधि) →
- परमः + क्रृष्ण : → परमार्तः (कर्मदारय समान्य)

6. संभ → “उपसर्ग द्वितीयानी”

(उपसर्गात् वंति धातो)
 अकारान्त 'उपसर्ग' 'वं' से अर्थ
 कियापद

64.

किसी भी 'आकारान्त' उपर्युक्त (ए/उप/आप/अव) के साथ 'झू' से आरम्भ होने वाले शब्दोंपद (भृष्टधाति) का मैल होने पर बृहि एकादेवा (आर) किया जाता है। एवं बृहि संविधानी जाती है। जैसे:-
 ए + भृष्टधाति → प्रादृष्टधाति (बृहि संविधि)
 उप + भृष्टधाति → उपादृष्टधाति (बृहि संविधि)
 आप + भृष्टधाति → आपादृष्टधाति (बृहि संविधि)

7. वार्तिक → को ओल्डोटडयोः समास वा को
 (ओल्ड + ओल्डयोः समास वा)

यदि 'अ/आ' रखर के साथ 'ओल्ड/ओल्ड' इत्य का मैल हो रहा है एवं सम्पूर्ण पद में कोई समास भी बन रहा हो तो वहाँ विकल्प से 'परखण' एकादेवा (ओ) एवं बृहि एकादेवा (ओ) होनां सही माने जीत ईश्वरी-
 → दन्त + ओल्डम् → दन्तोल्डम् (परखण संविधि)
 दन्तोल्डम् (बृहि संविधि)
 उभी ✓
 → कठ + ओल्डम् → कठोल्डम् (परखण संविधि)
 कठोल्डम् (बृहि संविधि)

उभी ↗
 → विष्व + ओल्डम् → विष्वोल्डम् (परखण संविधि)
 विष्वोल्डम् (बृहि संविधि)
 उभी ↗

स्थूल + ओल्डः → स्थूलोल्डः (परखण संविधि)
 (मीरा विलाल) स्थूलोल्डः (बृहि संविधि)
 उभी ↗

नोट ↗ यदि इस एकादेव के लाल्हों में कोई समास नहीं बन रहा हो तो वहाँ केवल बृहि एकादेवा (ओ) ही किया जाता है। जैसे:-

65.

तव + ओल्डम् → तवोल्डम् (परखण संविधि) X
 तवोल्डम् (बृहि संविधि) ✓

8. वार्तिक - को एवं चानियोगी को
 (एवं च अनियोगी)

(दि) 'एव' रखद अनियोगित यदि किसी स्थान पर 'एव' रखद का प्रयोग 'अनियोगित' में हो रहा हो तो वहाँ सम्भित करने पर परखण एकादेवा (ए) किया जाता है। एवं परखण संविधि मानी जाती है। और से-
 → एव + एव (ओल्डयो) → क्वचिव (ओल्डयो) → परखण संविधि

नोट ↗ यदि 'एव' रखद का उपयोग निश्चित अर्थ (ही) में हो रहा हो तो वहाँ बृहित एकादेवा (हे) ही किया जाता है। एवं बृहि संविधि मानी जाती है। जैसे:-
 → सदा + एव → सदैव (बृहि संविधि)
 → तत्वा + एव → तत्वैव (बृहि संविधि)
 → वसुधा + एव → वसुधैव (बृहि संविधि)
 → मम + एव → ममैव (बृहि संविधि)
 → तव + एव → तवैव (बृहि संविधि)

9. औप्त → "ओमाइ.इच्य"

(ओम आइः-य)

'ओम' शब्द 'आइ' (आ) उपसर्व 'अ/आ' रखर के साथ 'ओम' रखद का अवता 'आइ' उपसर्व से बने रखद का मैल होने पर परखण एकादेवा (ए) किया जाता है। एवं परखण संविधि मानी जाती है। जैसे:-
 → शिवाम् + ओम → शिवोम् (परखण संविधि)
 → शिव + इहि (आ+इहि) → शिवैहि (फलप संविधि)
 → अव + इहि (आ+इहि) → अवैहि (परखण संविधि)

(v) दीर्घ संधि

66. → 'दीर्घ' संक्षा लिखकर पढ़ा दें। → 'अंगले इज़न रख की आवाज़' मुर्झ की आवाज में आपत होने वाला स्वर 'इरव', 'दीर्घ' एवं 'एष्ट्रूत' संस्करण होता है।

→ पहचान → दीर्घों तरफ सर्वार्थ स्वर होने पर।

→ संधि कार्य द्वारा → "अकः सर्वार्थ दीर्घः"

- आ/आ + आ/आ → आ (एकादेश)
- ई/ई + ई/ई → ई (एकादेश)
- उ/उ + उ/उ → उ (एकादेश)
- ऋ/ऋ + ऋ/ऋ → ऋ/ऋ (एकादेश)
- ऋ + लृ → लृ/लृ (एकादेश)

परम् + अर्थः → परमार्थः ($\text{अ} + \text{अ} = \text{आ}$)

रुनान + अगारः → रुनानागारः ($\text{अ} + \text{आ} = \text{आ}$)

विद्यु + अर्थः → विद्यार्थः ($\text{आ} + \text{अ} = \text{आ}$)

यिकित्या + आत्मयः → यिकित्सात्मयः ($\text{आ} + \text{आ} = \text{आ}$)

कवि + इन्द्रः → कवीन्द्रः ($\text{इ} + \text{इ} = \text{ई}$)

गिरि + इशाः → गिरीशाः ($\text{इ} + \text{ई} = \text{ई}$)

वाची + इन्द्रः → वाचीन्द्रः ($\text{ई} + \text{इ} = \text{ई}$)

ऋ + इशाः → ऋशाः ($\text{ई} + \text{ई} = \text{ई}$)

भानु + उदयः → भानुदयः ($\text{उ} + \text{उ} = \text{ऊ}$)

सिंधु + उमिः → सिंधूमिः ($\text{उ} + \text{ऊ} = \text{ऊ}$)

वधु + उल्लासः → वधुल्लासः ($\text{उ} + \text{ऊ} = \text{ऊ}$)

(लेन) चमू + उज्जि → चमूज्जि ($\text{ऊ} + \text{ऊ} = \text{ऊ}$)

पितृ + अस्त्राम् → पितृस्त्राम् ($\text{ऋ} + \text{ऋ} = \text{ऋ}$)

ज " + " → पितृस्त्राम् ($\text{ऋ} + \text{ऋ} = \text{ई}$)

हौटु + ब्रह्मकारः → हौत्रकारः ($\text{ऋ} + \text{ऋ} = \text{ऋ}$)

ज " + " → हौत्रकारः ($\text{ऋ} + \text{ऋ} = \text{ई}$)

67. ठार + लकारः → हात्रारः ($\text{ठ} + \text{ए} = \text{ठ्य}$)
ज " + " → हौल्लकारः ($\text{ऋ} + \text{ए} = \text{ऊ्ल्ल}$)

→ विचर्षक कार्य

शर्त → शब्द में दीर्घ 'आ, ई, उ, ऋ' की मात्रा हो।
कार्य →

- 'आ' की मात्रा होने पर → अ/आ + अ/आ
- 'ई' की मात्रा होने पर → इ/ई + ई/ई
- 'उ' की मात्रा होने पर → उ/उ + उ/उ
- 'ऋ' की मात्रा होने पर → ऋ/ऋ + ऋ/ऋ

दीपावली → दीप + दीपली (पंक्ति)

मुक्तावली → मुक्ता + अवली

गीतावली → गीत + अवली (माला)

कवितावली → कविता + अवली

अग्राशानम् → अग्र + अशानम् (देवताओं का भीजन)

अ ग्रासनम् → अग्र + आसनम् (अंगे का आसन/बैठना)

आत्मावलोकनम् → आत्म + अवलोकनम्

झाक्षासवः → झाक्षा + आसवः (अंगुर की शराब)

प्राप्तीवद्धा → प्राप्ति + इवद्धा

मही-इः → मही + इन्द्रः

रजनी-शः → रजनी + इन्द्रः

अभीरुटः → अभि + इन्द्रः

अभीत्या → अभि + इप्त्या

वासिस्त्रम् → वि + इस्त्रम्

अधीक्षकः → अधि + इक्षकः

मंजुषा → मंजु + उषा

भूषमा → भू + उषमा

भूषिः → भू + उषिः

68.

- लघूतराणि → लघू + उत्तराणि
 वधूतसवः → वधू + उत्सवः
 भ्रातृम् → भ्रातृ + भ्रातृम्
 ⇒ अपवाद / विशेष नियम ⇒

1. वार्तिक - क्षु शक्त्याद्धु परखपं वाच्यम् क्षु
 → कुल + अटा → (A) कुलटा (परखप संधि) ✓
 (B) कुलाटा (दीर्घ संधि) X
 (C) उभ्रो X
 → शक्त + अन्धुः → (A) शक्तन्धुः (परखप संधि) ✓
 (B) शक्तान्धुः (दीर्घ संधि) X
 (C) उभ्रो X
 → कर्क + अन्धुः → (A) कर्कन्धुः (परखप संधि) ✓
 (B) कर्कान्धुः (दीर्घ संधि) X
 (C) उभ्रो X
 → मृत + अठः → (A) मृतठः (परखप संधि) X
 (B) मृताठः (दीर्घ संधि) X
 (C) उभ्रो X
 (B) उभ्रावेव न ✓

मृत + अठः:

मृत + अठः:
 म् आर त अठः: ⇒ मार्तठः:
 (आदि व्यंजि आर आदेश)

- मनस् + इला → (A) मनीषा (परखप संधि) ✓
 (B) मनसीषा (दीर्घ संधि) X
 (C) उभ्रो X
 → पतर् + अंजलि: → (A) पते जलि: (परखप संधि) ✓
 (B) पतंजलि: (दीर्घ संधि) X
 (C) उभ्रो X

69.

- हल + ईषा → (A) हलीषा (परखप संधि) ✓
 (B) हलैषा (गुण संधि) X
 (C) उभ्रो X
 लाङ्.गल + ईषा → (A) लाङ्.गलीषा (परखप संधि) ✓
 (B) लाङ्.गलैषा (गुण संधि) X
 (C) उभ्रो X

- सार + अड़.गः → (A) सारड़.गः (परखप संधि) ✓
 (B) साराड़.गः (दीर्घ संधि) X
 (C) उभ्रो X
 कारण → वार्तिक - क्षु सारड़.गः; पशुपाळिणी: | साराड़.गोऽन्यः: |

- उभ्रो [(i) सार + अड़.गः → 'पशु-पशी' गवि में लेने पर → सारड़.गः (परखप संधि)
 (ii) सार + अड़.गः → 'बलवान् विलशाली' गवि में लेने पर → साराड़.गः (दीर्घ संधि)]
 → अप + अड़.गः → (A) अपड़.गः (परखप संधि) → अंग से रहित
 (B) अपाड़.गः (दीर्घ संधि) → अंखों की पल
 (C) उभ्रो X

- सीमन् + अन्तः: → (A) सीमन्तः (परखप संधि) → सिर की माँग
 (B) सीमान्तः (दीर्घ संधि) → मुख्य सीमा/रक्षण
 (C) उभ्रो X

कारण → वार्तिक - क्षु सीमन्तः कैशर्वेशो | सीमान्तोऽन्यः: क्षु

- उभ्रो [(i) सीमन्+अन्तः: → 'सिर की माँग' गवि में लेने पर → सीमन्तः (परखप संधि)
 (ii) सीमन्+अन्तः: → 'मुख्य सीमा/रक्षण' अर्थ में लेने पर → सीमान्तः (दीर्घ संधि)]

(vi) पररूप संधि

⇒ सूत्र → “रीड. पररूपम्”

‘अकारान्त उपसर्ग + ‘ए/ओ’ स्वर से आरंभ कियापढ़’ →
(प्र/झप/उप/अव)

पररूप संधि

‘प्र+एजैते → प्रेजैते (पररूप संधि)

उप+ओष्ठिति → उपैष्ठिति (पररूप संधि)

उप+एजैते → उपैजैते (पररूप संधि)

प्र+ओष्ठिति → प्रैष्ठिति (पररूप संधि)

⇒ अपवाह्य ⇒

1. सूत्र → “एत्येष्ट्यत्पूरुषु”

(एति+एष्टिएत्यत्पूरुषु)

कृह

‘अकारान्त उपसर्ग के साथ ‘एति/एष्टिएत्यत्पूरुषु’ कियापढ़ों का मैल होने पर बृहदिकृदेश (ए) ही किया जाता है एवं बृहदिकृदेश सामनी जाती है। जैसे :-

उप+एति → उपैति (बृहदिकृदेश संधि)

प्र+एष्टिएत्यत्पूरुषु → प्रैष्टिएत्यत्पूरुषु (बृहदिकृदेश संधि)

उप+एत्यत्पूरुषु → उपैत्यत्पूरुषु (बृहदिकृदेश संधि)

प्र+एति → प्रैति (बृहदिकृदेश संधि)

‘प्रष्ठ’ शब्द के साथ ‘ऊह’ शब्द का मैल होने पर भी बृहदिकृदेश (योगी) किया जाता है एवं बृहदिसंधि सामनी जाती है। जैसे :-

प्रष्ठ+ऊहः → प्रैष्ठोः (बृहदिकृदेश संधि)

2. सूत्र → “वा लुप्यापिश्चः”

‘आपिशल-लुप्ति के मतानुसार अकारान्त उपसर्ग के साथ ‘एडकीयति/ओष्ठियति’, कियापढों का मैल होने पर विकल्प से पररूप एकादेश (ए/ओ) एवं

- 71
वृहदिकृदेश (ए/ओ) हीनों कार्य किये जा सकते हैं। जैसे :-
उप+एडकीयति → (A) उपैडकीयति (पररूप संधि)
(B) उपैडकीयति (बृहदिकृदेश संधि)
(C) उभी ↘
प्र+ओष्ठियति → (A) प्रैष्ठियति (पररूप संधि)
(B) प्रैष्ठियति (बृहदिकृदेश संधि)
(C) उभी ↘

⇒ याद रखने योग्य

- (i) अकारान्त उपसर्ग + एजैते/ओष्ठिति → कैवल पररूप संधि (ए/ओ)
(ii) अकारान्त उपसर्ग + एति/एष्टिएत्यत्पूरुषु → कैवल बृहदिकृदेश संधि (ए)
(iii) अकारान्त उपसर्ग + एडकीयति/ओष्ठियति → हीनों कार्य (ए/ओ) में जाता है।

(vii) पूर्वरूप संधि

सूत्र → “एडः पदान्तादति”

(एडः पदान्तात् अति)
(ए/ओ) पदान्त दक्षिण अ स्वर

- पदान्त ‘ए/ओ’ + हरख अ स्वर → पूर्वरूप संधि

अवग्रह चिह्न (S)

- बृहदि + अस्मिन् → बृहदिअस्मिन् → पूर्वरूप संधि
तपोवने + अव → तपौवनैऽव → पूर्वरूप संधि
हरै + अव → हरैऽव → पूर्वरूप संधि
विष्णो + अव → विष्णौऽव → पूर्वरूप संधि
स्तोऽस्ति + अपि → स्तोऽपि → पूर्वरूप संधि
कौशो + अयम् → कौशोऽयम् → पूर्वरूप संधि

(viii) प्रकृतिभाव संधि

परिभाषा → जब किसी विच्छेद-कार्य से संघिकार्य करने पर केवल '+' का विहृ होता है तो वहाँ प्रकृतिभाव संघिकार्य नहीं होता है तो वहाँ प्रकृतिभाव संघिकार्य नहीं जाती है।
निम्नलिखित प्रकार की स्थितियाँ प्राप्त होने पर प्रकृतिभाव संघिकार्य होती हैं —

- सूत्र → "पुत्र प्रवृद्धा अनि नित्यम्"
'पुत्र स्वर/प्रवृद्धा संज्ञक स्वर + कोड़ी नी स्वर' → प्रकृतिभाव संघिकार्य
आगच्छ कृष्ण + अव गोचरीत → आगच्छ कृष्ण अव गोचरीत
एहि राम + अव तिष्ठ → एहि राम अव तिष्ठ
हरी + एते → हरी एते
वाइरा + अमू → वाइरा अमू
विष्णु + उमी → विष्णु उमी
लंते + एते → लंते एते
स्वर्वते + अमू → स्वर्वते अमू

- सूत्र → "निपात एकाजनाऽ।"
(निपात एक अन्य अनु आइ.)
अस्त्राचारी स्वना में 'यादि गत में' एक स्वर वाले निम्नलिखित ॥ निपात शब्द लिखे गए हैं। यथा —
(i) अ (ii) आ (iii) इ (iv) ई (v) उ (vi) ऊ
(vii) ए (viii) ऐ (ix) ओ (x) औ (xi) आइ.
इन ॥ निपातों में से 'आइ' को छोड़कर अन्य सभी निपातों की प्रवृद्धा संज्ञ मानी जाती है, अतः इनके साथ किसी स्वर का मैल टोने पर प्रकृतिभाव संघिकार्य होता है। अर्थात् - अ + ई-ई : → अ ई-ई : (प्रकृतिभाव संघिकार्य)
उ + ऊ-ऊ : → उ ऊ-ऊ : (प्रकृतिभाव संघिकार्य)

- सूत्र → "अद्दो मात्"
'अद्दु' शब्द के किसी कृप में यदि 'मू' के बाद दीर्घी होती है तो उसकी प्रवृद्धा संज्ञ मानी जाती है।
'अद्दु' शब्द कृप

विशेषित	एकवर्त्तन	द्विवर्त्तन	व्यवर्त्तन
अध्यमा	असा	अमू	अमी
द्विरीपा	अमुम्	अमू	अमुम्
त्रिरीपा	अमुना	अमुम्याम्	अमीमि:
चतुरीपा	अमुत्तमे	अमुम्याम्	अमीम्यः
पंचरीपा	अमुभात्	अमुम्याम्	अमीम्यः
षष्ठीपा	अमुत्तम	अमुम्याम्	अमीम्यः
सप्तमीपा	अमुखिन्	अमुम्योः	अमीषः

- इन शब्द कृपों में 'अमू' व 'अमी' कृप की प्रवृद्धा संज्ञ मानी जाती है। अतः इनके साथ किसी स्वर का मैल दीने पर प्रकृतिभाव संघिकार्य होती है। जैसे -
अमी + ईशाः → अमी ईशाः (प्रकृतिभाव संघिकार्य)
अमू + आगच्छताम् → अमू आगच्छताम् (प्रकृतिभाव संघिकार्य)

- सूत्र → "ओत्"
चारिगां के प्राप्त होने वाले ओकारान्त निपात शब्द की प्रवृद्धा संज्ञ मानी जाती है। उस शीर्षी में निम्नलिखित निपात शब्द शामिल किये जाते हैं -
(i) ओ (ii) औ (iii) अठी
(iv) आहो (v) अधो (vi) उत्ताहो
अरः इनके साथ किसी स्वर का मैल दीने पर प्रकृतिभाव संघिकार्य होती है। जैसे -
अहो + ईशाः → अहो ईशाः (प्रकृतिभाव संघिकार्य)

5. शृंगे → “इकीज्ञवर्णी शाकल्यसंयुक्तशब्द”
‘चक्री + अन’ इस पद के निम्नानुसार दो संधि-रूप
बनाये जा सकते हैं -

- (i) ‘पाणिनी’ के अनुसार ‘यण’ संधि के लिए -
- (ii) ‘शाकल्य’ के अनुसार प्रकृतिभाव संधि। साथ में ही ‘यकी’
के दीर्घ ‘ई’ का फूल ‘इ’ में परिवर्तन। जैसे:-
चक्री + अन → चक्रयन्न (यण संधि)
चक्री अन (प्रकृतिभाव संधि)
उभया ↗

6. शृंगे → “प्रकृत्यवः”
‘ब्रह्मा + वृद्धिः’ इस पद के भी निम्नानुसार दो संधि-
रूप बनाये जाते हैं -

- (i) ‘पाणिनी’ के अनुसार ईगुण संधि (“उर्णा रपरः”)
- (ii) ‘शाकल्य’ के अनुसार → प्रकृतिभाव संधि। साथ ही ‘ब्रह्मा’
के दीर्घ ‘आ’ स्वर का फूल ‘अ’ स्वर में परिवर्तन। जैसे:-
ब्रह्मा + वृद्धिः → ब्रद्धिः (यण संधि)
ब्रह्म वृद्धिः (प्रकृतिभाव संधि)
उभया ↗

7. शृंगे → “सम्बुद्धी शाकल्यसंयुक्तनामी”
ओकारान्त सम्बोधन + ‘इति’ शब्द
ओकारान्त सम्बोधन वालक शब्द के साथ ‘इति’ शब्द का
मैल होने पर विकल्प से प्रकृतिभाव संधि होती है। जैसे:-
विष्णी + इति अविद्याविति (“एयौज्यवायवः” शब्द से)
(i) विष्ण इति (“लीपः शाकल्यसम्” शब्द से)
(ii) विष्णी इति (“सम्बुद्धी शाकल्यसम्” शब्द से)
(iii) सर्वे ↗

75

8. शृंगे → “उमः”
9. शृंगे → “ऊँ”
‘उ’ निपात शब्द के साथ ‘इति’ शब्द का मैल होने पर
विकल्प से प्रकृतिभाव संधि होती है। अथवा “ऊँ” शब्द
से ‘उ’ को ‘ऊँ’ में भी बदला जा सकता है। जैसे:-
उ + इति → (A) विति (“इकी याणि” शब्द से)
(B) उ इति (“उमः” शब्द से प्रकृतिभाव संधि)
(C) ऊँ इति (“ऊँ” शब्द से)
(D) सर्वे ↗

10. शृंगे → “मधः उभी वा वा”
‘किमु + उक्तम्’ की संधि करने पर एक तो प्रकृतिभाव
संधि होती है। साथ ही ‘किमु’ के ‘उ’ रूपर को विकल्प
से ‘व’ में भी परिवर्तित किया जा सकता है। जैसे:-
किमु + उक्तम् → (A) किमु उक्तम् (प्रकृतिभाव संधि)
(B) किम्बुक्तम् (विकल्प से ‘व’)
(C) उभी ↗

2. हल्ल संधि / व्यापक संधि

परिभाषा → जब किसी 'हल्ल' (व्यंजन) वर्ण के साथ 'हल्ल' वर्ण का अधेवा 'अच्' (स्वर) वर्ण का मिल देता है तो वहाँ हल्ल संधि मानी जाती है। इस संधि में निम्नलिखित तीन व्यापकियाँ प्राप्त होती हैं—

- (i) हल्ल + अ-च् → हल्ल संधि → वाक् + ईशः (कु + ई)
- (ii) अच् + हल्ल → हल्ल संधि → शिव + द्याया (अ + द्य)
- (iii) हल्ल + हल्ल → हल्ल संधि → मगर + नावः (त + न)

⇒ 'हल्ल' संधि के भेद →

- (i) हल्ल संधि के प्रमुखतः 'सात' भेद माने जाते हैं। अथा—
- (ii) रसुल्ल संधि
- (iii) रहुल्ल संधि
- (iv) जश्वल्ल संधि
- (v) झनुल्ल संधि
- (vi) घनुल्ल संधि
- (vii) आगम संधि

(i) रसुल्ल संधि

1. स्वेच्छा → "स्तोः इनुनाः इनः"
- "स/त् धृ द्धृ न् + श/त् धृ ज्ञ श अ"
- श अ ए इ न् श अ
- श/त् धृ ज्ञ अ अ + स/त् धृ द्धृ न्
- श अ ए इ न् श अ अ

उद्द + ज्वलः → उज्ज्वलः
यज् + न् → यज्ज्वः → यज्ज्वः
सत् + पित् → सप्तित्
सत् + चरित्रम् → सचरित्रम्
रामसु + शीते → रामशीते
हरिसु + चिनोति → हरिचिनोति
बाहिर्भिन्न + जयः → बाहिर्भिन्नजयः

I II
उद्द / ज्वलः]
तद् / तद्]
मृद् / मृत्]
शरद् / शरत्]

महज्जानम् → महत् + ज्ञानम् II (जश्वल संधि)
महद् + ज्ञानम् I (रसुल्ल संधि)
उज्ज्वलः → उत् + ज्वलः II (रहुल्ल संधि)
उद्द + ज्वलः I (रसुल्ल संधि)

⇒ अपवाह →

सुत्र → "आत्"
यदि इव पद के अन्त में 'अ' वर्ण लिखा हुआ हो तब उसके साथ किसी 'त' वर्गीय वर्ण का मिल होता है वहाँ रसुल्ल "आदेशा तहरे करेके कैवल्य संभीतः कार्य किया जाता है, जैसे— → अशु + नः → अशनः (संयोग)
विशु + नः → विनः (संयोग)

(ii) छुट्टव संधि

78. सूत्र → “एडना हुः” (स्त्रीः एडना हुः)
‘स् त् थ् द् ध् न् + श् ट् ठ् ड् ह् ण्’
↓ ↓ ↓ ↓ + +

ष् ट् ठ् ड् ह् ण्

अथवा

‘ष् ट् ठ् ड् ह् ण् + स् त् थ् द् ध् न्’
↓ ↓ ↓ + + + ↓

ष् ट् ठ् ड् ह् ण्

उपर्युक्तः - रामस्य + षट्ठः → रामषट्ठः

षष्ठ + थः → षष्ठः

उडः + उयनम् → उउयनम्

रामस्य + ईक्षी → रामैक्षीक्षी

कृष्ण + नः ~ कृणः

चक्रिन + द्वैक्षी → चक्रिष्वैक्षी

तद् + ईक्षा → तदैक्षा

तद् + ईक्षा → तदैक्षा (चतुर्व संधि)

⇒ अपवाह / शिशिल नियम ॥

1. सूत्र → “तो षिः”

यदि सूत्र पद के अन्त में ‘त’ वर्ग का कोई वर्ण लिखा

हुआ हो एवं पर पद (अन्तम्) के भारप्य में गुरुध्यन्य ‘ष’

लिखा हुआ हो तो वहाँ संयुक्त वर्ग में छुट्टव आदेश

नहीं करके केवल संयोग किया जाता है। ऐसे

सन् + षट्ठः → सन्षट्ठ (सन्षट्ठः) → संयोग

2. सूत्र → “न पदान्ताट्टरनाम्”

(न पदान्ताट्टरोः अनाम्)

पदान्त ‘ट’ वर्ग के साथ ‘नाम / नवति / नगति’ की

द्वितीय अन्त को छुट्टव दर्शात् या देश / दश दृश्यर्थी से

79. आरम्भ हो रहा हो तो वहाँ छुट्टव आदेश नहीं होता है।
‘नाम / नवति / नगति’ छात्र हीने पर छुट्टव आदेश किया जाता है।
जैसे :- षष्ठ (षट्) + ते → षट् ते → षट् ते
षष्ठ (षट्) + सन्तः → षट् सन्तः → षट् सन्तः
→ षष्ठ (षट्) + नाम → षट् नाम I / षट्नाम II उभी ॥
→ षष्ठ (षट्) + नवति → षट् नवति I / षट्नवति उभी ॥
→ षष्ठ (षट्) + नगति → षट् नगति I / षट्नगति उभी ॥

[षट् + ते] 80. इनमें छुट्टव आदेश नहीं होता है।
सन् + षट्ठः केवल संयोग होता है।

षट्नाम → षष्ठ + नाम I

षट् + नाम II

षट् + नाम III

संवि ॥

(iii) जृश्वल संधि

सूत्र → “सालं जशोऽन्ते”

(सालं जश अन्ते)

अर्थात् पदान्त में ‘साल’ वर्ग होने पर संयुक्त कार्य में उसे

‘जश’ वर्ग में बदल दिया जाता है। यथा -

कृष्ण - ‘सालं वर्णं’ ‘जश’ वर्णं

1. कृ खं ग घ ङ ह → हा

2. य॒ ष्वं ज॑ झ॑ श॑ → ज॑

3. ट॑ ठ॑ ड॑ ढ॑ घ॑ → ठ॑

4. त॑ थ॑ द॑ ध॑ झ॑ → त॑

5. ए॑ फ॑ ल॑ भ॑ → ल॑

व्यापार में यह नियम निम्नानुसार लागू होता है -

कृत्यांक वर्ण + स्वरवर्ण / यत्रल / तीसरा, चौथा वर्ण
↓ ↓ ↓ + ↓

या यु उ द ल

जीसनः -

वाक् + ईशाः → वागीशः (वृहस्पति)
वाक् + ईशा → वागीशा (सरस्वती)
अस्य + शादि → अशादि
अन् + अन्तम् → अनन्तम्
एव + आननः → एआननः
एव + शुभम् → एशुभम्
सत् + इपदेषाः → सदुपदेषाः
जगत् + जगता → जगदेवा
अप् + जम् → अजनम् (जाति)
अप् + धिः → अधिः
प्राक् + एतिहासिकम् → प्रातिहासिकम्
वाक् + वानम् → वागदानम् (संगांडि)
दिक् + दर्शनम् → दिग्दर्शनम्
जगत् + ईशाः → जगदीशाः
अप् + दः → अव्दः (वोदल)

2. शून्य → “झलं जशा मणि”

पदान्त 'झल्' वर्ण + 'जशा' वर्ण (3/4 वर्ण)
'जशा' वर्ण

चानु / पदान्त में: 'न्तुर्धि' कर्ण + 'न्तुर्धि' कर्ण

-तीसरा वर्ण

जीसनः -

लम् + धिः → लाधिः, शुद्ध + धिः → शुद्धिः/शुष्मि (शुद्धिः)

लभ् + धः → लाधः, शुद्ध + धः → शुद्धः (शुद्धः)

लुभ् + धः → लृधः

लुध् + धः → लृधः

लुध् + धिः → लृधिः (बुहि) / लृधिः

81.

(iv) अनुस्वार या परस्वर्ण संयोग

1. शून्य → “मीऽनुस्वारः”
पदान्त 'म्' + कोई भी 'ह्ल' वर्ण
अनुस्वार (अं)

अन्तर्निष्ठ उद्धवाक्ये अस्ति -

(A) अहम् शृणु गत्वामि ।

(B) अहं शृणु गत्वामि ।

(C) अहम् शृणु गत्वामि ।

(D) अहं शृणु गत्वामि । (8)

स्वर्यम् + वरः → स्वर्यवरः

स्वर्यम् + वद → स्वर्यवद्

धर्मम् + चर → धर्मं चरः

हरिम् + वन्दे → हरिं वन्दे

2. शून्य → “नश्चापदान्तस्य मालि”

(नः च योपदान्तस्य झालि)

अर्थात् अपदान्त 'म्' 'न' के साथ किसी भी 'झल्' वर्ण के मैले होने पर 'म्' 'न' के स्थान पर अनुस्वार हो जाता है।

'झाक्रम् + स्यते' → झाक्रस्यते

'यशान् + मि' → यशास्मि

'दम् + डः' → दंडः

'अम् + कः' → अकः

3. शून्य → “झनुस्वारस्य यदि परस्वर्णः”

'अपदान्त 'म्' 'न' । झाल् वर्ण'

अनुस्वार + यदि वर्ण (नश्चापदान्तस्य झालि)

(अनुस्वार) परस्वर्ण (अनुस्वारस्य यदि परस्वर्णः)

अर्थात् अपदान्त अनुस्वार के परे कोई यथौ वर्ण (स्पृश्य)

व्यञ्जन एवं अन्तर्स्थाव्यञ्जन) होने पर अनुस्वार अपने परवर्ती

वर्ण से स्वाक्षर इन के पंचम वर्ण में बदल जाता है।
इस प्रकार कोड डाकता है। ऐसे:

सम् + करः → संकरः / साक्षर / लाक्षर
अलम् + करः → अलंकरः / अलक्षकरः / अलक्षण
अम् + ना: → अन्नः / अनुग्रहः / अनुङ्ग
भम् + तु: → भंतुः / भवतुः
खम् + डः → खंडः / खण्डः
कम् + पन्नः → कंपनम् / कम्पनम्
सम् + दीः → संदीः / सन्दीः

५. स्मृतः → “वा पदान्तरस्य”

“पदान्त में अनुस्वार ‘म्’ + ‘यथ्’ वर्ण”

अनुस्वार
परस्वार
अहम् + गत्थायि → अहं गत्थायि] ३६१
अहङ् गत्थायि
त्वम् + करीषि → त्वं करीषि] ३६१
त्वङ् करीषि

६. नोट → “पदान्त ‘म्’ + य/व/ल”

अनुस्वार
अनुसासिक (ये/वँ/लँ)
जैसे → सम् + यत्ता → संयत्ता / संयुत्ता (संयुत्ता)
सम् + वत्सरः → संवत्सरः / सवत्सरः (सवत्सरः)
पुम् + लिङ्गः → पुमिङ्गः / पुलिङ्गः (पुलिङ्गः)

७. स्मृतः → “मोराजि समः चर्वी”

‘सम्’ उपरार्थक के साथ कृत प्रत्यय का

मेल होते पर ‘म्’ की अनुस्वार में वही बदला जाता है।
अपिनु ‘म् ना’ का संयोजन कर दिया जाता है।

सम् + राजः

समाजः (“मोराजि समः चर्वी”)

समाष्टः (“अस्त्वभूजस्त्वजस्त्वन्यज्ञज्ञाज्ञद्वराणः एः”)

समाइः (“सलां जगोऽन्ते” खण्ड से)

समाइः (“खरि च” खण्ड से)

वि + राजः

विराजः (“मोराजि समः चर्वी”)

विराषः (“अश्वधारजस्त्वजस्त्वन्यज्ञज्ञाज्ञद्वराणः एः”)

विराङ्गः (“सलां जगोऽन्ते” खण्ड से)

विराहः (“खरि च” खण्ड से)

८. सूत्र → “ते मप्ते वा”

‘म् + त् (म्)’

अनुस्वार
‘म्’ ही रहेगा

किम् + द्वलयति → किं द्वलयति] ३६१
किम् द्वलयति

९. वार्तिकः → कृ यत्ता पैरे यत्ता वैति वक्तव्यम् की

‘म् + त् (या/वा/न्)’

अनुस्वार
‘ये/वँ/लँ’

जैसे:

किम् + याः → किं ह्याः / किम् याः] ३६१

किम् + द्वलयति → किं द्वलयति / किं द्वलयति] ३६१

किम् + द्वादयति → किं द्वादयति / किम् द्वादयति] ३६१

84.

४) → “नपर नः”

‘म् + ह(न)’

अनुस्वार नः

किम् + द्वृते → किं द्वृते / किन् द्वृते ३भी ८

9. वार्तिक → ४ सम्युक्ताना सो वक्तव्यः ४

‘सम् / पुम् / कान्’ के साथ ‘सुट्’ (स्य) का अभाव भी होता है।

‘सम् / पुम् / कान्’ के साथ निम्नलिखित रिट्रियो प्रति होने पर इनके ‘म् / न’ को तो विकल्प से अनुस्वार या अनुनासिक (८) में बदल दिया जाता है। साथ ही होने वाले के बीच में सुट् (स्य) का आगम भी होता है।

अनुस्वार करने का रूप → “अनुनासिकात् पौर्णित्वाऽः” ॥

अनुनासिक करने का रूप → “शब्दानुनासिकः पूर्वस्य लु वा”॥

सुट् आगम करनेवाला रूप →

(क) सूत् → “सम्यरित्यो करोति शूषणो”

‘सम् + हृषादु से बना पद’

अनुनासिक + सुट् का आगम

सम् + कृतम् → संस्कृतम् / संस्कृतम् ३भी ८

सम् + हृतिः → संहृतिः / संस्कृतिः ३भी ८

सम् + कर्ता → संस्कृता / संस्कृती ३भी ८

सम् + कारः → सास्कारः / संस्कारः ३भी ८

सम् + कर्ताम् → संस्कर्ताम् / संस्करणम् ३भी ८

मोटे → ‘परि’ उपसर्ग के साथ भी ‘कृ’ धातु से बने पदों का मैल होने पर होने वाले के बीच में सूर्यन्य ‘स्य’ का आगम हो जाता है। जैसे:-

परि + कारः → परिकारः (हल सन्धि)

परि + कर्ताम् → परिकर्ताम् (हल सन्धि)

परि + कर्ता → परिकर्ता (हल सन्धि)

परि + कृतम् → परिकृतम् (हल सन्धि)

परि + कृतिः → परिकृतिः (हल सन्धि)

परि + कर्ताति → परिकर्ताति (हल सन्धि)

(ख) सूत् → “पूमः अभ्यम्पर्”

‘पुम् + खय् (अम्)’

अनुस्वार अनुनासिक + सुट् (स्य) का आगम

पुम् + कौकिलः → चैकौकिलः / पुंस्कौकिलः ३भी ८

पुम् + कः → पुंस्कः / पुंस्कः ३भी ८

पुम् + पुः → पुंस्पुः / पुंस्पुः ३भी ८

(ज) सूत् → “कानोभृते”

‘कान् + कान्’

अनुस्वार अनुनासिक + सुट् (स्य) का आगम

कान् + कान् → कांस्कान् / कांस्कान् ३भी ८

10. सूत् → “तोलि”

‘त् थ् द् ध् न् + ल्’ → पृष्ठवर्फ लोधि

तद् + लघः → तल्लधः , विद्वान् + लिङ्गी → विद्वाल्लिङ्गी/विद्वाल्लिङ्गी
 तद् + लीनम् → तल्लीनम् , अग्नवान् + लसीति → अग्नवाल्लसीति
 उद् + लैखः → उल्लैखः , अस्मिन् + लौके → अस्मिलौके
 उद् + लालः → उल्लालः , अग्नवान् + लभेति → अग्नवाल्लभेति
 विद्युत् + लता → विद्युल्लता

86.

(V) अनुनासिक या पूर्वस्वरी संधि

1. सूत्र → “येौऽनुनासिकेऽनुनासिको वा”
 ‘पदान्त ‘ये’ वर्ण + अनुनासिकवंकर (पंचम वर्ण)’
 विकल्प से ‘पंचम वर्ण’
 वाक्यांकनियम → कृ/यृ/इ/त/प/ह + पंचवाँ वर्ण,
 ↓ ↓ ↓ ↓ ↓
 इ. श्रृंग मूल
 एतद् + मूरारिः → एतन्मूरारिः / एतद् मूरारिः ३५१ ✓

2. वार्तिक → कृ प्रत्ययों भाषायां नित्यम् कृ

लौकिक संस्कृत भाषायां में इस प्रकार के शब्दों का उपयोग होने पर नित्य पूर्वस्वरी अंडला अर्थात् पंचम वर्ण का उपयोग किया जाता है। जैसे:-

- वाक् + मयम् → वोइ.मयम्
 प्राक् + मुखः → प्राङ्.मुखः
 प्रथक् + आत्मा → प्रथक्लात्मा
 दिक् + नागः → दिङ्.नागः
 अद्वृ + मन्मम् → अद्व.मन्मम्
 अन्य + मयम् → अन्मयम्
 षट् + मासः → ष०मासः
 षट् + मुखः → ष०मुखः
 जगत् + नागः → जगन्नाथः
 पर + नगः → पन्नगः
 गच्छ + मात्रा → ग्विमात्रा
 ग्विद् + मयम् → ग्विमयम्
 तद् + मात्रा → तन्मात्रा
 तद् + मयम् → तन्मयम्
 अप् + मयम् → अन्मयम्
 सत् + नारी → सन्नारी

87.

सत् + मार्गः → सन्मार्गः

उद् + नतिः → उन्नतिः

उद् + नयनम् → उन्नयनम्

उद् + मुखः → उन्मुखः

जगत् + माता → जगन्माता

षट् + नाम् → ष०माम्

षट् नाम (छड़त्व संधि)

ष०माम् (अनुनासिक संधि)] ३५१

नोट → मृद् / मृत् शब्द के साथ किसी पंचम वर्ण का मैल होने पर इनके ‘द/त’ की ‘न्’ में नहीं बदला कर ‘ण्’ में बदला जाता है। जैसे:-

१ मृद् / मृत् + मयः → मृत्मयः

मृद् / मृत् + मधी → मृत्मधी

मृद् / मृत् + मृति → मृत्मृतिः

3. सूत्र → “झयो हौऽन्यतररस्याम्”

“पदान्त ‘झय’ वर्ण + ह” → पूर्वस्वरी संधि

(कृ/यृ/इ/त/प/ह + ह)

↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓

ग ज झ द ष ह विकल्प से चतुर्वर्ण वर्णः

वाक् + हन्तिः → वालरिः / वाहरिः ३५१

अन् + इन्नः → अज्ञिन्नः / अज्ञन्नः ३५१

एट् + हारः → षट्टारः / घट्टारः ३५१

एट् + हन्तिः → एधन्तिः (पहारिः) / पहन्तिः ३५१

अप् + हराम् → अधराम् / अवराम् ३५१

उद् + हारः → उद्धारः (उष्टारः) / उद्धारः ३५१

तद् + हितम् → तद्धितम् (तहितम्) / तद्धितम् ३५१

उद् + हरणम् → उद्धरणम् (उद्धरणम्) / उद्दरणम् ३७।
 मरुत् + हारिणी → मरुद्धारिणी (मरुद्धारिणी) / मरुद्धारिणी ३७।
 जगत् + हारिणी → जगद्धारिणी (जगद्धारिणी) / जगद्धारिणी ३७।
 जगत् + हर्ति → जगद्धर्ति (जगद्धर्ति) / जगद्धर्ति ३७।

4. शून्य → “उदः स्वास्त्रभो पूर्वस्थ ”
 “उद् उपसर्ग + ‘स्वा’ चातुर्सेषना पद/‘स्त्रंशु’ शब्द” → पूर्वस्थनोर्ण
 उद् स्त्रं का लिए ३०॥

उद् + स्थानम् → उत्थानम्
 उद् + स्थापनम् → उत्थापनम्
 उद् + शिवितः → डाक्षितः
 उद् + स्तम्भनम् → उत्स्तम्भनम्

(v) चतुर्थ संघि

1. सूत्र → “खरि च ”
 “पदान्तं खल् वर्ण + ‘खर्’ वर्ण (1/2. वर्ण, अष्ट. स.)
 ‘चर्’ वर्ण (प्रधम वर्ण)

तद् + कालः → तत्कालः
 तद् + परः → तत्परः
 तद् + समः → तत्समः
 उद् + कीर्तिः → उत्कीर्तिः
 उद् + तीर्तिः → उत्तीर्तिः
 उद् + स्वननम् → उत्स्वननम्
 पठ् + सन्तः → बट्सन्तः
 षड् + ते → षट्ते
 संसद् + सद्गुण → संसत्सद्गुणः

89.
 संसद् + सद्गुण → संसत्सद्गुण
 शरद् + कालः → शरत्कालः

2. सूत्र → “शश्वीडहि ”
 “पदान्तं ‘शश्’ वर्ण + श् (अम्)”
 ↓ ↓
 ‘च’ विकल्प से ‘छ’

तद् + छिवः → ताच्छिवः / तच्छिवः ३७।
 उद् + श्वरसः → उत्श्वरसः / उत्श्वरसः ३७।
 उद् + श्वरसनम् → उत्श्वरसनम् / उत्श्वरसनम् ३७।
 सत् + शास्त्रम् → सच्चास्त्रम् / सच्चास्त्रम् ३७।
 उद् + श्वृंखलः → उत्श्वृंखलः / उत्श्वृंखलः ३७।
 उद् + मायः → उत्श्मायः / उत्श्मायः ३७।
 शरद् + शशिः → शारत्शशिः / शारत्शशिः ३७।
 शीमत् + शरद् + चन्द्रः → शीमच्छरचन्द्रः / शीमशरचन्द्रः ३७।
 “खरि च ”

3. वार्तिक → की छत्वमनीति वस्थम् की
 (“छत्वम् अम् इति वस्थम् ”)
 “पदान्तं ‘शश्’ वर्ण + श् (अम्)”
 ↓ ↓
 ‘च’ विकल्प से ‘छ’

तद् + श्वृंखलः → तश्वृंखलः:
 उत्श्वृंखलः:

तत्परिकः:
 ३७।

(vii) आगम संधि

(क) 'तुक' आगम संधि

→ किसी भी रबर के साथ 'छ' वाले का मैल होने पर दोनों पढ़ों के बीच में 'तुक' (त) का आगम होता है।
पुनः "स्तोः अनुना इन्दुः" सुना से इस 'तु' की शृङ्खला आदि 'च' भी हो जाता है।
'तुक' आगम करने के लिए निम्नलिखित पाठ सुन
प्रकृत होते हैं ~

1. सूत → "है-य" → 'कर्क रबर + छ' होने पर तुक आगम।

2. सूत → "हीर्षात्" → आपदान्त हीर्ष रबर + छ' होने पर तुक आगम।

3. सूत → "पद्मनाभः" → पद्मन लीर्धि रबर + छ' होने पर

विकल्प रैन तुक आगम।

4. सूत → "आइनमाइन्यन्" → आइ.(आ)/माइ.(मा) + छ'
होने पर तुक आगम।

जीर्णे:-

शिव + स्वाया ("छ-य" सुना है)

शिव च द्वाया ("स्तोः अनुना इन्दुः" सुना है)

शिवचत्वाया

भानु + द्वादः → अनुद्विदः ("छ-य")

ब्रह्मा + द्वाया → ब्रह्मद्वाया ("छ-य")

सूर्य + द्वाया → तर्कद्वाया ("छ-य")

द्वित्र + द्वाया → द्वित्वद्वाया ("छ-य")

इक्षु + द्विदः → सवद्विदः ("छ-य")

पिं + द्विदः → विद्विदः ("छ-य")

पद + द्विदः → पद्विदः ("छ-य")

र्षी + द्विद्योते → द्विद्योते ("दीर्घात्")

सेनासुरा + द्वाया → सेनासुराद्वाया ("दीर्घति")

परिती + द्वाया → परितीद्वाया/परितीद्वाया उभों

("पद्मनाभः")

लक्ष्मी + द्वाया → लक्ष्मीद्वाया ("पदान्तद्वा")

लक्ष्मी द्वाया (वैकल्पिक रूप)
उभों ~

आ + द्वाद्योते → आद्याद्योते ("आइनमाइन्य")

मा + द्विद्यते → माद्यिद्यते ("आइनमाइन्य")

5. सूत → "शि तुक"

"पद्मन त" कर्तु त्वा"

विकल्प से तुक आगम

सन् + शम्भुः → सन् तु शम्भुः ("शि तुक" से)

सन् च शम्भुः ("स्तोः अनुना इन्दुः" से)

सन् च द्वाया ("शरद्वीड्यते" सुना है)

सन् च द्वा द्वाया ("स्तोः अनुना इन्दुः" से)

सूत द्वाया: I

सूत द्वाया: II

सूत द्वाया: III 'तुक' आगम नहीं करने पर

सूत द्वाया: IV

सूत ~

(ख) डंसुट आगम संधि

1. सूत → "डंमी द्वलाद्विपि डंसुट नित्यम्"

'द्वल रबर (डू.ए/न) त्वा' की भी रबर'

"डू.ए/न" का आगम नहीं

प्रत्येक + आत्मा

प्रत्येक च आत्मा

प्रत्येकात्मा

सुगांठ + ईशा:

सुगांठ च ईशा:

सुगांठीराः

खादन् + अपि
खादन् एव अपि
खादन्नापि

भगवन् + अयम्
भगवन् एव अयम्
भगवन्नयम्

(ग) धुट् आगम सन्ति

1. शृंत्र → “ठः सि धुट्”

“पदान्ते ठ् + स्”

विकल्प से “धुट्” (थ) का आगम होगा

षड् + सन्तः

षड् थ् सन्तः (“ठः सि धुट्” सूत्र से)

षड् त् सन्तः (“खरि च” सूत्र से)

I षट् सन्तः (“खरि च” सूत्र से)

II षट् सन्तः:

उभी ✓

2. शृंगा → “नश्य”

“पदान्ते न् + स्”

विकल्प से “धुट्” (थ) का आगम होगा

सन् + सः

सन् थ् सः (“नश्य” सूत्र से)

सन् त् सः (“खरि च” सूत्र से)

सन्सः } उभी ✓

सन्सः

(द) कुक् / धुक् आगम

1. शृंत्र → “ठः कुक् धुक् बारि”

2. वार्तिक → कृ न्येयोऽद्वितीया गति पौष्टिकरसादीर्णते वर्त्य सुक्ते

“ठः इ + ‘शार’ वर्ण (शाषस्)”

विकल्प से “कुक्” (ह) अथवा “हुक्” (ट) का आगम होगा।

इस प्रकार की स्थिति प्राप्त होने पर “पौष्टिकरस्” मुख्य के मतानुसार प्रब्रह्म वर्ण (क/ट) के स्थान पर द्वितीय वर्ण (ख/ठ) का आगम भी हो सकता है। जैसे:-

प्राङ् + षष्ठः

प्राङ् कृ षष्ठः

प्राङ् लष्ठः I } सर्वे प्राङ् खष्ठः II } सर्वे प्राङ् लष्ठः III } सर्वे

प्राङ् खष्ठः III } सर्वे प्राङ् लष्ठः III } सर्वे

(द) सुट् आगम

1. शृंगा → “नश्वद्यप्रशान्”

(नः श्ववि अप्रशान्)

“पदान्ते न् + ध्वव्” (अम्)

(प्रशान् के द्वितीय)

(i) अनुस्वार या (ं) अनुनासिक

[अनुस्वार करने वाला श्ववि → “अनुनासिकात् परोऽनुस्वरः”]

अनुनासिक करने वाला श्ववि → “अनुनासिकः ईवस्म तु वा”

साथ ही दोनों पदों के बीच में ‘सुट्’ (स) का आगम भी होगा।

तां स् ते

तां स् ते → तांस्ते } उभी ✓

तां स् ते → तास्ते

महान् + च

महां सून्य → महांश्वप → महांश्वन् } उभी ✓

महां सून्य → महांश्वप → महांश्वन्

कार्सि-मन् + चित्

- कार्सि^{मूँ} सूचित् → कर्सिं शूचित् → कर्सि॒शूचि॑त् } ७
 कार्सि॒मूँ सूचित् → कर्सि॒शूचित् → कर्सि॒शूचि॑त् } ८

उपरी वाक्यों में वर्णन के लिए उपरी वाक्यों का अध्ययन करना चाहिए। इसके बाद वर्णन के लिए उपरी वाक्यों का अध्ययन करना चाहिए।

प्रशान् + तनोति → प्रशान्तनोति (संयोग)

3. विसर्ग संधि

परिभाषा → जब विसर्ग के साथ किसी स्वर अथवा ठंडे अन् वर्ण का मैल होता है, तो वहाँ विसर्ग संधि मानी जाती है। जैसे:-

- (i) नमः + ते → नमते (: + त्)
- (ii) पुनः + च → पुनश्च (: + च्) } सर्व विसर्ग संधि
- (iii) धनुः + टंकारः → धनुष्टंकार (: + ट्)
- (iv) मनः + योगः → मनोयोगः (: + य्) } उत्तर विसर्ग संधि
- (v) मनः + अभिरामः → मनोभरामः (: + अ)
- (vi) आयुः + वैदः → आयुर्वैदः (: + व्) } सर्व विसर्ग संधि
- (vii) अतः + एव → अतएव (: + ए) } विसर्गलीप संधि
- (viii) पुनः + रमेते → पुनरमेते (: + र्) } विसर्गलीप दीर्घ संधि
- (ix) अहन् + पर्तिः → अहर्पतिः (न(:)+प्) } अहन् शब्दस्य संधि-

⇒ विसर्ग संधि के भौद =

विसर्ग के स्थान पर होने वाले परिवर्तन के आधार
 पर विसर्ग संधि के प्रमुखतः 03 एवं कुल 06 भौद
 माने जाते हैं यहाँ -

- (1) सत्त्व विसर्गसंधि → विसर्ग के स्थान पर 'स्' (श, ष, स) हो।
 - (2.) उत्त्व विसर्गसंधि → विसर्ग के स्थान पर 'उ' (ओ) हो जाना।
 - (3.) रुत्व विसर्गसंधि → विसर्ग के स्थान पर 'रु' हो जाना।
- ⇒ अन्य भेद ⇒
- (4.) विसर्गलीप संधि → केवल विसर्ग (ः) का लीप होना, अब कोई परिवर्तन नहीं होना।
 - (5.) विसर्गलीप दीर्घसंधि → विसर्ग का लीप हो जाना, साथ ही उसके पूर्व स्थित हस्त स्वर (अ, इ, उ) का दीर्घ (आ, ई, ऊ) हो जाना।
 - (6.) अहन् शब्दसंधि → 'अहन्' के 'न्' को विसर्ग मानना।

(1) सत्त्व विसर्गसंधि

1. शूरा → "विसर्जनीयस्य सः"

"विसर्ग + 'खर' वर्ण
↓
स्

(i) विसर्ग + च/छ

स् ("विसर्जनीयस्य सः")
छ ("स्तोः श्चुना श्चुः")

(ii) विसर्ग + ट/ठ

स् ("विसर्जनीयस्य सः")
ठ ("एहुना एहुः")

(iii) विसर्ग + त/थ

स् ("विसर्जनीयस्य सः")
थ ("स्त्रीः श्वाना श्वाः")

- नमः + ते → नमस्ते
 पुनः + -य → पुनश्य
 धनुः + लंकार → धनुष्टंकारः
 शिरः + व्राणः → शिरस्त्राणः (हेलमेट)
 हरि॒ः + च॒न्द॑ः → हरिच॒न्द॑ः
 चतु॒ः + दीक्षा॑ → चतु॒दीक्षा॑
 ज्योति॑ः + चक्रम् → ज्योति॑चक्रम्
 मनः + लिंगित्संकः → मनश्चिंगित्संकः / मनोचिंगित्संकः

2. सूत्र → "वारारि"

"विसर्गी + 'शारू' वर्ग (शा/ष/स)"

शा/ष/स - विसर्गी ही रहेगा

- शशः + शारीरम् → चशशशारीरम् / शशः शारीरम् ३५१ ✓
 चतु॒ः + षष्ठि॑ → चतु॒ष्ठिठि॑ / चतु॒ः षष्ठि॑ ३५१ ✓
 पुरः + स्तरः → पुरस्त्सरः / पुरः स्तरः ३५१ ✓
 निः + शुल्कम् → निश्चशुल्कम् / निः शुल्कम् ३५१ ✓
 अन्तः + साहस्रः → अन्तस्साहस्रः / अन्तः साहस्रः ३५१ ✓
 अन्तः + रुधः → अन्तस्सरुधः / अन्तः रुधः ३५१ ✓
 सर्पः + सर्पति॑ → सर्पस्सर्पति॑ / सर्पः सर्पति॑ ३५१ ✓
 दुः॑ + शासनः → दुश्शासनः / दुः॑ शासनः ३५१ ✓
 दुः॑ + साहस्री॑ → दुरस्साहस्री॑ / दुः॑ साहस्री॑ ३५१ ✓

3. सूत्र → "शारप्रे विसर्जनीयः"

"विसर्गी + खर (शारू)"

विसर्गी ही रहेगा

कः + त्सरुः → कःत्सरुः

घनाधनः + ह्लोभणः → घनाधनः ह्लोभणः

4. वार्तिक → के खंडरे शारि वा विसर्ग लोपो वक्तव्यः ॥
 "विसर्ग + शारु(खर)"

विकल्प से

श/ष/स (विसर्जनीयस्य सः)	विसर्ग ही रहेगा (वा शारि)	विसर्ग का लोप (खंडरे शारि वा)
----------------------------	------------------------------	----------------------------------

रामः + स्थाता → रामस्त्थाता (विसर्जनीयस्य सः)
 रामः स्थाता (वा शारि)
 रामस्थाता (खंडरे शारि वा)
 सर्वे

अन्तः + स्थाः → अन्तस्थाः / अन्तः स्थाः / अन्तस्थः सर्वे ✓
 हरिः + स्फुरति → हरिस्फुरति / हरिः स्फुरति / हरिस्फुरति सर्वे ✓

5. सूत्र → "कुवो अकुपो च"
 "दस्व 'अ' स्वर + विसर्ग + कु/खु/यु/फ"

विसर्ग ही रहेगा अर्ध विसर्ग होगा (अ)

I II
 कः + करोति → कःकरोति / कुकरोति उभी ✓
 कः + खनति → कःखनति / कुखनति उभी ✓
 कः + पन्थति → कःपन्थति / कुपन्थति उभी ✓
 कः + फलति → कःफलति / कुफलति उभी ✓

विशेष तथा नैट → अर्ध विसर्ग का प्रयोग वैदिक संस्कृत भाषा में ही किया जाता था। लौकिक संस्कृत भाषा में अर्द्धविसर्ग का प्रयोग नहीं किया जाता है। अतः वर्तमान में इस प्रकार की विशेषता प्राप्त होने पर विसर्ग का विसर्ग ही रखा जाता है। असः-

प्रातः + काले → प्रातःकाले

मनः + कामना → मनःकामना ✓ / मनोकामना ✗

98.

पृष्ठ०८१५० => इठाइः → अंजनसंधि
 परि सु कारः / सुव अणासु) _/_/
 परिपक्षारः (इठा चः)

मनः + प्रसादः → मनःप्रसादः

अन्तः + पुरम् → अन्तःपुरम्

अन्तः + करणम् → अन्तःकरणम्

अधः + पतनम् → अधःपतनम्

6. सूत्र → " नमस्त्पुरसाग्रात्योः "

" नमः / पुरः + 'कु' धातु से बना पद "
 ↓
 'स्'

नमः + कारः → नमस्कारः

नमः + कर्ता → नमस्कर्ता

नमः + कृतम् → नमस्कृतम्

नमः + करीति → नमस्करीति

पुरः + कारः → पुरस्कारः

पुरः + कर्ता → पुरस्कर्ता

पुरः + कृतम् → पुरस्कृतम्

पुरः + करीति → पुरस्करीति

7. सूत्र → " तिरसोऽन्यतरस्थाम् "

" तिरः " शब्द + 'कु' धातु से बना पद "
 ↓ ↓

स् विसर्गहीरणा

तिरः + कारः → तिरस्कारः / तिरःकारः उभौ ।

तिरः + कर्ता → तिरस्कर्ता / तिरःकर्ता उभौ ।

तिरः + कृतम् → तिरस्कृतम् / तिरःकृतम् उभौ ।

तिरः + करीति → तिरस्करीति / तिरःकरीति उभौ ।

8. सूत्र \rightarrow “अधशिरसी पदे”
“अधः / शिरः + ‘पद’ शब्द”

‘स्’ विसर्ग ही रहा।

अधः + पदम् \rightarrow अधरपदम् / अधःपदम् उभी ।
शिरः + पदम् \rightarrow शिरपदम् / शिरःपदम् उभी ।

9. सूत्र \rightarrow “अतः कृक्षिकं सकुशां कुभपात्राक० इवन० यस्य”

“इस्व ‘अ’ स्वर + विसर्ग + ‘कृ’ धातु छा पद / ‘कृ’ धातु का पद /
कंस / कुशा / कुम्भ / पात्र / क०”

अयः + कारः \rightarrow अयस्कारः

अयः + काम्यति \rightarrow अयस्काम्यति

अयः + कामः \rightarrow अयस्कामः

अयः + कंसः \rightarrow अयस्कंसः

अयः + कुशा \rightarrow अयस्कुशा

अयः + कुम्भम् \rightarrow अयस्कुम्भम् (जीहे का घड़ा)

अयः + पात्रम् \rightarrow अयस्पात्रम्

अयः + क० \rightarrow अयस्क०

10. वार्तिक \rightarrow पाशकल्पककान्येष्विति वाच्यम्

“इस्व ‘अ’ स्वर + विसर्ग + पाश / कल्प / क / कान्य”

‘स्’

पयः + पाशम् \rightarrow पयस्पाशम्

यशः + कल्पम् \rightarrow यशस्कल्पम्

यशः + कम् \rightarrow यशस्कम्

यशः कान्याति \rightarrow यशस्कान्याति

11. सुन्त्र → “इ०ः षः”

“हस्त्वं ‘इ०’ स्वर + विसर्ग + पाश / कल्प / क / काम्य”
 ↓
 ष

सर्पिः + पाशम् → सर्पिष्पाशम्

सर्पिः + कल्पम् → सर्पिष्कल्पम्

सर्पिः + कम् → सर्पिष्कम्

सर्पिः + काम्याति → सर्पिष्काम्याति

12. सुन्त्र → “इदुदुपद्यस्य चाप्त्ययस्य”

(इत् उत् उपद्यस्य -य अप्त्ययस्य)

“हस्त्वं ‘इ०’ स्वर + विसर्ग + क / ख / प / फ”
 ↓
 ष

आविः + कारः → आविष्कारः

आविः + कृतम् → आविष्कृतम्

बहिः + कारः → बहिष्कारः

बहिः + कृतम् → बहिष्कृतम्

चतुः + पद्यम् → चतुष्पद्यम्

चतुः + पदम् → चतुष्पदम्

चतुः + पाठिः → चतुष्पाठिः

चतुः + पाठिः → चतुष्पाठिः

निः + फलम् → निष्फलम्

दुः + फलम् → दुष्फलम्

निः + प्रयोजनम् → निष्प्रयोजनम्

दुः + प्रयारः → दुष्प्रयारः

प्रश्न → निम्नाङ्कित प्रश्न का समान विकल्प विसर्ग संधि: नाहीत?

(A) आविष्कारः

(B) बहिष्कारः

(C) पुरस्कारः

(D) परिष्कारः

(E)

लज्जा संधि (खुट आगम)

101.

- प्रश्न → निम्नांकि-करेषु कार्यमन् विकल्पे विसर्ग संधि: आस्ति ?
 (A) निष्ठा (नि+स्था) (B) द्वयिष्ठिरः (द्वयि+स्थिरः)
 (C) यष्टी (षष्टि+ष्टी) (D) पुनश्च (पुनः+श्च) (D)

13. सुन्नते → “हिंस्त्रियते कृत्वोऽर्थे”
 “हिः / श्विः / चतुः + ‘कृ’ ध्यातु से होना पद”

ष विसर्ग ही रहेगा

- हिः + करोति → हिंस्त्रियते / हिः करात् ३७१ ✓
 श्विः + करोति → श्विकरोति / श्विः करोति ३७१ ✓
 चतुः + करोति → चतुष्करोति / चतुः करोति ३७१ ✓

(2) उत्तर विसर्ग संधि

1. सुन्नते → “अतो रोरप्लुतादप्लुते”,
 (अतः रोः अप्लुतात् अप्लुते)
 “हस्ते ‘अ’ स्वर + विसर्गा + हस्ते ‘अ’ स्वर”
 अ + अ ↓ पूर्वरूप (एउः पदान्तादौति)
 अ (आद्युणः) (S)

- यशोः + अभिलाषा → यशोऽभिलाषा
 यशो अ अभिलाषा (अतो रोरप्लुतादप्लुते)
 यशो अभिलाषा (आद्युणः)
 यशोऽभिलाषा (एउः पदान्तादौति)

- मनः + अभिरामः → मनोऽभिरामः
 शिवः + अस्त्वयः → शिवोऽस्त्वयः
 सः + अपि → स्योऽपि

कः + अपि → कोऽपि

कोशः + अयम् → कोशोऽयम्

परः + अष्टिः → परोऽष्टाः (पराष्टाः)

अन्यः + अन्यः → अन्योऽन्यः (अन्यान्यः)

प्रश्न → 'हितोपदेशोऽयम्' इत्यस्य लुभित्वादः आस्ते -

(A) हित + उपदेशः + अयम् [उत्तर विसर्ग संयोग]

(B) हित + उपदेशो + अयम् [पूर्वसंज्ञ संयोग]

(C) उभी

(D) उभावेषन

प्रश्न → 'हितोपदेशोऽयम्' इत्यस्य लुभित्वादः आस्ते -

(A) हित + उपदेशः + अयम्

(B) हित + उपदेशो + अयम्

(C) हित + उपदेशा + अयम्

(D) सर्वे

प्रश्न - 'शिवोऽर्थः' इत्यस्य लुभित्वादः आस्ते -

(A) शिवस् + अर्थः (A) शिवस् + अर्थः I ✓

(B) शिवः + अर्थः (B) शिवः + अर्थः II ✓

(C) शिवो + अर्थः (C) शिवो + अर्थः III ✓

(D) सर्वे (D) शिवर + अर्थः

2. शूरो → "हर्षी-य"

"हर्षव अ, स्वर + विसर्ग + 'हर्ष' वर्ण (3,4,5 वर्ण ह, य वरल)

अ + उ

ओ (आइ गुणः)

103.

- मनः + जः → मनोजः
 सरः + जम् → सरोजम्
 उरः + जम् → उरोजम्
 पथः + द् → पथोदः
 यशः + दा → यशोदा
 अधः + गति → अधीगति
 रामः + गतिं → रामोगतिं
 यशः + धरा → यशोधरा
 तपः + भूमिः → तपोभूमिः
 तपः + मयम् → तपोमयम्
 मनः + मयम् → मनोमयम्
 मनः + हरम् → मनोहरम्
 मनः + योगः → मनोयोगः
 मनः + रोगः → मनोरोगः
 अधः + लिखितम् → अधीलिखितम्
 तपः + वेनम् → तपोवेनम्

प्रश्न → निम्नाङ्कित संघटनाचा अशुद्धशब्दः आस्तु -

- (A) अधीगति → अधः + गति (हारी च)
 (B) अधीहरताकरकता → अधः + हरताकरकता (हारी च)
 (C) अधीवेशम् → अधः + वेशम् (हारी च)
 (D) अधीपतनम् → अधः + पतनम् (कुपो अकारी च)

(3) संख्या विसर्ग संधि

1. सूत्र → “संख्या वर्णः”

“‘अ’ के अल्पवा अन्य रूप + विसर्ग + ‘अशा’ वर्ण”

↓ (संख्या स्वर, ह, य व रूप, 3/4/5)
 “र”

- बहिः + गमनम् → बहिर्गमनम्
 बहिः + आगमनम् → बहिरागमनम्
 बहिः + अंगः → बहिरंगः
 चतुः + मुजः → चतुर्मुजः
 आयुः + वेदः → आयुवेदः
 धनुः + विद्या → धनुविद्या
 धनुः + धरः → धनुधरः
 ज्योतिः + आदित्यः → ज्योतिरादित्यः
 ज्योतिः + गमय → ज्योतिर्गमय
 मूल्योः + मा → मूल्यामा
 वृष्टिभिर्यान्ते → वृष्टिभिराद्यान्ते
 निः + आशा → निराशा
 निः + इक्षकः → निरीक्षकः
 कुः + जनः → कुर्जनः
 कुः + भावना → कुभावना
 प्रादुः + माव → प्रादुर्भावः
 हीरः + अवदत् → हीररवदत्

नोट → 'पुनः/अन्तः/स्वः' के साथ किसी 'अशा' वर्ग का मैल हैन पर इनके विसर्ग के 'र' में ही बदला जाता है एवं स्ववर्ग संस्थि ही मानी जाती है जैसे:-

- पुनः + जनम् → पुनर्जनम्
 पुनः + विवाह → पुनविवाह
 पुनः + आवृत्तिः → पुनरावृत्तिः
 पुनः + अवलोकनम् → पुनरवलोकनम् / पुनरावलोकनम्
 अन्तः + वातम् → अन्तर्वातम्
 अन्तः + अत्मा → अन्तरात्मा
 स्वः + गः → स्वगः

(4) विसर्ग लोप संधि

1. सूत्र → “भौ-भग्नो-अधो-अपुर्वस्य योऽशि”
“भौ/भग्नो/अधो/अपुर्वस्य + विसर्ग + ‘अश’ वर्ण”
‘य’

(i) सूत्र → “लोपः शाक्त्यस्य” → “य” का लोप

(ii) सूत्र → “हलि सर्वधाम्” →

(क) “य” + “हल्” वर्ण होने पर तो “य” का नित्य लोप होता है।

(ख) “य” + “स्वर” वर्ण होने पर “य” का विकल्प से लोप होता है।

जर्मः - भौः + देवा:, भग्नोः + नमस्ते, अधोः + याहि
भौय देवा: भग्नोय नमस्ते अधोय याहि
भौ देवा: भग्नो नमस्ते अधो याहि

देवा: + इह

देवाय इह

देवा इह / देवायि ह ३५/ ✓

नोट → वर्तमान में यह नियम निम्नानुसार लागू होता है -

“‘अ’ स्वर + विसर्ग + ‘अ’ के अलावा अन्य स्वर”

केवल विसर्ग का लोप होगा,

अन्य कोई परिवर्तन नहीं होगा।

अतः + एव → अत एव

घनः + इव → घन इव

यशः + इच्छा → यशा इच्छा

मनः + उच्छिदः → मन उच्छिदः

ततः + एव → तत एव

2. सूत्र → “एततद्वाः सुभीपीडकारनभूसमासे हलि”,

एतद् / तद्

एषः सः

“एषः / सः + ‘हल्’ वर्ण”

विसर्ग का लोप होगा

एषः + विष्णुः → एष विष्णुः

सः + शाम्भुः → स शाम्भुः

एषः + कृष्णः → एष कृष्णः

सः + रामः → स रामः

परन → निम्नांकिते पूर्णादधिवाक्यमासि -

- (A) सः पठति ।
- (B) स पठति ।
- (C) उभा॑
- (D) उभा॑वेव न

नोट → (i) यदि 'एषः' के रथान पर 'एषकः' लिखा हुआ ही तो वह विसर्ग का जीप नहीं होता है, अपितु अन्य संघि नियमों के अनुसार संघि कार्य किया जाता है जैसे:-
एषकः + मूषकः → एषको मूषकः ("हारी च" रुप से)
(उत्तर विसर्ग संघि)

(ii) यदि 'सः' के रथान पर नभ् तत्पुलष समात्र वाचक 'असः' लिखा हुआ ही तो वह पर भी विसर्ग का जीप नहीं होता है, अपितु अन्य संघि नियमों के अनुसार संघि कार्य किया जाता है जैसे-
असः + शिवः → असशिवः / असः शिव ("वा शरि" रुप से)
(स्त्रव विसर्ग संघि)

(iii) यदि 'एषः / सः' के साथ किसी स्वरवर्ण का मिल हो रहा ही तो वह पर भी विसर्ग का जीप नहीं होता है। अपितु अन्य संघि नियमों के अनुसार संघि कार्य किया जाता है जैसे-
सः + अपि → सोऽपि ("अतो रौरप्लुतोदप्लुते" रुप से)
(उत्तर विसर्ग संघि)

3. पूछा → " सोऽप्नि जीप चेत्पादपुरणम् "

यदि किसी स्वर्ण के चरण की पूर्ति करने के लिए 'सः'

107.

के विसर्ग का लोप करने की आवश्यकता ही तो वहाँ 'सः' और रूपर होने पर भी विसर्ग का लोप किया जा सकता है। लोप करने के बाद अन्य संधि कार्य भी किये जा सकते हैं।

सः + एव दाशारथि रामः

सैष दाशारथि रामः (अनुष्टुप ध्वनि की प्रति करने हेतु)

सैष दाशारथि रामः, सैष राजा द्वाधिपत्तेः ।

सैष कौमी महावनी, सैष भीमो महावलः ॥

(सः + एव)

(5.) विसर्ग लोप दीर्घ संधि

1. शून्य → "रोरि"

2. शून्य → "द्वलोपे पूर्वस्य दीर्घोणः"

"हस्य रखर (आ/इ/उ) + विसर्ग (र) + र"

↓ ↓ ↓ ↓

दीर्घ स्वर (आ/इ/उ) लोप ("रोरि" शब्द से)
("द्वलोपे पूर्वस्य दीर्घोणः")

पुनर् (पुनः) + रमेते → पुनारमेते

हरिर् (हरिः) + रम्यः → हरीरम्यः

शम्भुर (शम्भुः) + राजेते → शम्भुराजेते

अन्तर् (अन्तः) + रात्रियः → अन्तारात्रियः

निर् (निः) + रसः → नीरसः

निर् (निः) + रवः → नीरवः

निर् (निः) + रम्यः → नीरम्यः

दुर् (दुः) + रम्यम् → दुरम्यम्

दुर् (दुः) + राजः → दुराजः

नोट → “रोरि” सुन के दिवारा ‘र’ के रथान पर प्रयुक्त होने वाले विसर्ग का ही लोप किया जाता है, यदि ‘स’ के रथान पर विसर्ग आ रहा हो तो वहाँ यह नियम लागू नहीं होता है, ऐसे शब्दों में “हाशि च” सुन के अनुलाभ उत्पन्न होता है, ऐसे शब्दों में “हाशि च” सुन के अनुलाभ उत्पन्न होता है।

विसर्ग संधि कार्य ही किया जाता है। जैसे →

मनस् (मनः) + रथः → मनोरथः (उत्पन्न विसर्ग संधि)

मनस् (मनः) + रोगः → मनोरोगः (उत्पन्न विसर्ग संधि)

मनस् (मनः) + रंजनम् → मनोरंजनम् (उत्पन्न विसर्ग संधि)

(6.) अहन् शब्दसंय संधि

→ ‘अहन्’ के ‘न’ को विसर्ग (रुः) ही माना जाता है।

1. सूचा → “रोइसुपि”

2. वार्तिक → कृ लुपराणिरखन्तरेषु लक्षं वात्यम् कृ

(i) अहन् + रूप / रात्रि / रथन्तर / कोई भी ‘सुप्’ प्रत्यय
अहा

(ii) अहन् + इनके अलावा अन्य कोई शब्द
↓
अहर्

जैसः - अहन् + पतिः → अहपतिः

(दिन) (स्वामी) → (सूर्य)

अहन् + रूपम् → अहोरूपम्

अहन् + मुखम् → अहर्मुखम्

अहन् + रात्रिः → अहोरात्रिः

अहन् + निशा → अहनिशाम्

अहन् + वृत्याम् → अहवृत्याम्

अहन् + रथन्तरम् → अहोरथन्तरम्

अहन् + अहन्

अहर् अहर्

अहरहः